A = वास्तविक जनसंख्या (Actual Population)

O = अनुकूलतम जनसंख्या (Optimum Population)

यदि M ऋणात्मक है, तब देश में न्यून जनसंख्या की स्थिति होगी और यदि M धनात्मक है, तब देश में अति जनसंख्या की स्थिति होगी।

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत की आलोचनाएँ (Criticism of the Optimum Theory of Population) :

यद्यपि यह सिद्धांत माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण एवं तार्किक है। परन्तु कुछ बिन्दुओं पर इसकी भी आलोचना हुई है जो निम्नलिखित है–

(1) अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत जिन मान्यताओं पर आधारित है, वे वास्तविक नहीं है। सिद्धांत की मान्यता के विपरीत कुल जनसंख्य एवं कार्यशील जनसंख्या का अनुपात स्थिर नहीं रहता बल्कि बदलता रहता है। आधुनिक समाज में प्राकृतिक संसाधन, पूँजी प्रौद्योगिकी आदि तत्व बदलते रहते हैं।

(2) चूँकि प्राकृतिक संसाधन की मात्रा, पूँजी तथा तकनिकी ज्ञान की अवस्था में परिवर्तन होता रहता है, फलतः अनुकूलतम बिन्दु भी बदलता रहता है। ऐसी स्थिति में इसकी सही माप करना कठिन है।

(3) यह सिद्धांत मूलतः आर्थिक तत्त्वों (प्रति व्यक्ति आय या उत्पादन) की ही व्याख्या करता है तथा समाजिक सांस्कृतिक, व राजनीतिक आदि तत्वों को कोई महत्व नहीं देता है जबकि अनुकूलतम जनसंख्या का सम्बन्ध इन तत्वों से भी होता है।

(4) यह सिद्धांत राष्ट्रीय आय अथवा प्रतिव्यक्ति औसत आय को जनसंख्या के सुख्या-समृद्धि कर आधार मानता है। यह राष्ट्रीय आय के न्याय संगत वितरण पर विचार नहीं करता है। संभव है कि राष्ट्रीय आय का अधिकांश भाग गिने चुने पूँजीपतियों तथा उद्योगपतियों के हाथों में केन्द्रित होता रहे तथा सामान्य जनता के आर्थिक कल्याण में किसी तरह की वृद्धि न हो पाए।

(5) कुछ विद्वान इसे जनसंख्या सिद्धांत नहीं मानते। यह जनसंख्या के क्षेत्र में 'अनुकूलतम' के विचार का प्रयोग मात्र है। यह संकल्पना जनसंख्या विकास से सम्बन्धित नियमों तथा इसे नियंत्रित करने की विधियों के बारे में कुछ नहीं बताती है।

यह अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत की आलोचना की गयी है क्योंकि इसके मापन में अनेक कठिनाईयाँ हैं, जिसके कारण इसका व्यवहारिक महत्व कम है। तथापि जनसंख्या और संसाधनों के अंतर्सम्बन्ध की व्याख्या हेतु यह एक महत्वपूर्ण संकल्पना है जिसके संदर्भ में ही अन्य कई संकल्पनाओं

की व्याख्या की जा सकती है। अनुकूलत जनसंख्या का विचार सरकार द्वारा अपनायी जाने वाली जनसंख्या-नीति के लिए ठोस वस्तुगत आधार प्रदान करता है। यदि देश में जनाधिक्य की स्थिति मौजूद है, तब सरकार को जनसंख्या नियंत्रण के उपाय लागू करना चाहिए एवं उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम विदोहन की योजनाएँ क्रियान्वित करनी चाहिए।

5.4 माल्थस जनसंख्या सिद्धान्त और अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त में तुलना (Comparison Between Malthusian Theory of Population and Optimum Population Theory)

दोनों सिद्धांतों की तुलना के प्रमुख पक्ष निम्नोक्त है।

(1) माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत निराशावादी दृष्टिकोण पर आधारित है क्योंकि यह सिद्धांत जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि को अवांछनीय मानता है। इसके विपरीत अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धांत आशावादी दृष्टिकोण रखना है क्योंकि यह सिद्धांत जनसंख्या के अनुकूलतम आकार तक जनसंख्या में वृद्धि को देश के हित में मानता है।

(2) माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत जनसंख्या और खाद्यापूर्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करता है, जबकि अनुकूलतम जनसंख्या, सिद्धांत जनसंख्या और राष्ट्रीय आय के मध्य सम्बन्ध की व्याख्या करता है।

(3) माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि के लिए गुणोत्तर दर (1, 2, 4, 8, 16, 32...) और आपूर्ति के लिए समान्तर दर (1, 2, 3, 4, 5 .....) का नियम निर्धारित किया था। जबकि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत में इन वृद्धि दरों के लिए कोई निश्चित गणितीय नियम लागू नहीं किया गया है।

(4) माल्थस का सिद्धांत अति जनसंख्या वाले देशों पर ही लागू होता है, जबकि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत अति जनसंख्या और न्यून जनसंख्या वाले सभी देशों पर लागू होता है।

(5) माल्थस के सिद्धांत के अनुसार अति जनसंख्या होने पर अकाल, महामारी, युद्ध, भुखमारी आदि प्राकृतिक प्रकोप होने लगते हैं, परन्तु अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत के अनुसार जनसंख्या अधिक होने पर इन प्रकोपों की सक्रियता जरूरी नहीं है, भले ही प्रतिव्यक्ति आय घटेगी एवं जीवन स्तर निम्न होने लगेगा।

(6) माल्थस का सिद्धांत जनसंख्या वृद्धि को अति भयावह और चिंताजनक बताता है और जनसंख्या का नियंत्रित करने पर जोर देता है तथा सभी देशों के लिए एक-सी नीति प्रतिपादित करता है। अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत देश के सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति के अनुकूल उचित जनसंख्या नीति के निर्धारण पर बल देता है।

(7) माल्थस का सिद्धांत सैद्धांतिक है, व्यवहारिक नहीं क्योंकि उन्होंने लिखा है, ''प्रकृति की

मेज कुछ इने-गिने व्यक्तियों के लिए बिछाई गई है, जो बिन बुलाए आते हैं, उन्हें भूखे रहना पड़ेगा।'' जबकि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत यह मानता है कि देश के प्राकृतिक साधनों कर अधिकतम उपयोग करने के लिए जनसंख्या में वृद्धि अनिवार्य है।

(8) माल्थस का सिद्धांत यह मानकर चलता है कि कृषि में सदैव ही 'ह्रासमान प्रतिफल नियम' लागू होता है, जबकि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत के अनुसार अनुकूलतम जनसंख्या के आकार तक वृद्धिमान प्रतिफल नियम' तथा उसके बाद 'ह्रासमान प्रतिफल नियम लागू होता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की तुलना में अधिक वैज्ञानिक एवं श्रेष्ठ है, परन्तु यह कहना भी सही होगा कि माल्थस का सिद्धांत जनसंख्या का मौलिक सिद्धांत है।

5.5 सारांश (Summing-up)

किसी प्रदेश की जनसंख्या और वहां उपलब्ध संसाधन में घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। जनसंख्या-संसाधन के अंतर्सम्बन्ध के आधार पर ही देश के आर्थिक-सामाजिक विकास का स्तर देखा जा सकता है। जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बढ़ता जाता है। यह सतत प्रक्रिया जहाँ मानव समाज का विकास करता है वहीं जनसंख्या की अतिशय वृद्धि कई समस्याओं को जन्म देती है। जनसंख्या सम्बन्धी इन समस्याओं से सम्बन्धित दो प्रमुख सिद्धांत हैं–(1) जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत तथा (2) अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत। जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत स्पष्ट करता है कि किस प्रकार एक अति पिछड़ा क्षेत्र क्रमशः विकास करते हुए आधुनिक वैज्ञानिक समाज में परिवर्तित होता है तथा इस लम्बे विकास कार्य में जनसंख्या में परिवर्तन लानेवाले कारक जन्मदर और मृत्युदर में किस प्रकार ह्रास होता है। प्रारंभ में उच्च जन्मदर एवं उच्च मृत्युदर के कारण जनसंख्या वृद्धि लगभग स्थिर बनी रहती है, वहीं अंतिम अवस्था में निम्न जन्मदर तथा निम्न मृत्युदर के कारण जनसंख्या वृद्धि स्थिर हो जाती है। विज्ञान के विकास के साथ सबसे पहले मृत्युदर में गिरावट आती है, जन्मदर उच्च बनी रहती है। फलतः जनसंख्या विस्फोटक हो जाती है।

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत का परिमार्जित प्रतिफल है। यह सिद्धांत जनसंख्या के उस आदर्श आकार को बतलाया है, जिसमें प्रदेश सर्वाधिक सामाजिक आर्थिक उन्नति को प्राप्त करता है। यह दशा जनसंख्या-संसाधन संतुलन का प्रतीक होता है। यह सिद्धांत बतलाता है कि अधिकतम आर्थिक विकास के लिए मानवशक्ति का प्रर्याप्त होना आवश्यक है। जनसंख्या वृद्धि हमेशाः हानिकारक नहीं होती है।

इन सिद्धांतों के आलोक में कोई देश अपनी जनसंख्या नीति लागू कर राष्ट्र कल्याण की ओर अग्रसर हो सकता है।

5.6 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **निम्नलिखित में से कौन सा मानव संसाधन है?**

   (क) मानव का ज्ञान (ख) कृषि भूमि (ग) वन भूमि (घ) खदान भूमि

2. **जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के प्रतिपादक कौन है?**

   (क) थाम्पसन (ख) नाटेस्टीन

   (ग) जी.टी. ट्रिवार्था (घ) पीटर काक्स

3. **नाटेस्ट्रीन ने जनसंख्या संक्रमण की कितनी अवस्था को बतलाया है?**

   (क) चार (ख) पाँच (ग) तीन (घ) छः

4. **भारत जनांकिकीय संक्रमण की किस अवस्था में है–**

   (क) तीसरी (ख) चौथी (ग) पाँचवी (घ) दूसरी

5. **किसने कहा-अनुकूलतम जनसंख्या वह है जो प्रतिव्यक्ति अधिकतम आय प्रदान करता है–**

   (क) राबिन्स (ख) बोल्डिंग (ग) कार साण्डर्स (घ) डाल्टन

6. **अनुकूलत जनसंख्या सिद्धांत का प्रतिपादक कौन हैं–**

   (क) क्लार्क (ख) जिम्मर मेन

   (ग) जी०एम गोसल (घ) एडविन केनन

7. **अनुकूलतम जनसंख्या के विचल की माप सम्बन्धी सूत्र** $M = \frac{A-0}{0}$ **किसने दिया है?**

   (क) राविन्स (ख) डाल्टन (ग) नाटेस्टीन (घ) ट्रिवार्था

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनांकिकी संक्रमण सिद्धांत की विवेचना कीजिए।

   Discuss the theory of demographic transition

2. अनुकूलतम जनसंख्या-सिद्धांत पर प्रकाश डालिए।

   Throw light on the theory of optimum population.

3. माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत एवं अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत की तुलना करें।

   Compare the Malthasian theory of populatio and the theory of optimum population.

5.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. डॉ० एस० डी० मौर्य – जनसंख्या भूगोल
2. आर० सी० चँदना – जनसंख्या भूगोल
3. हीरा लाल – जनसंख्या भूगोल
4. क्लार्क जॉन आई० – पोपुलेशन ज्योग्रफी

●●●

भारत में जनसंख्या संयोजन/संघटन
(Population Composition in India)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

1.1 उद्देश्य (Objective)

1.2 परिचय (Introduction)

1.3 लिंग संघटन (Sex Composition)

1.4 आयु संघटन (Age Composition)

1.5 ग्रामीण नगरीय संघटन (Rural Urban Composition)

1.6 आर्थिक संघटन (Economic Composition)

1.7 साक्षरता संघटन (Literacy Composition)

1.8 भाषाई संघटन (Linguistic Composition)

1.9 जातीय संघटन (Caste Composition)

1.10 धार्मिक संघटन (Religious Composition)

1.11 निष्कर्ष (Conclusion)

1.12 अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise)

(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

1.13 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1.1 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य भारत मे जनसंख्या संयोजन संबंधी निम्नलिखित विशेषताओं को विस्तार से बताना है :-

- भारतीय जनसंख्या की लिंग एवं आयु संबंधी संरचनात्मक विशेषता।
- ग्रामीण-नगरीय एवं आर्थिक संरचना।
- साक्षरता, भाषाई एवं जातीय संयोजन से संबंधित विशेषताएँ।
- भारतीय जनसंख्या में धार्मिक संयोजन।

1.2 उद्देश्य (Objective)

जनसंख्या संयोजन या संघटन का अर्थ किसी भी देश-प्रदेश की जनसंख्या की संरचनात्मक विशेषताओं से है। इसके अंतर्गत उन घटकों को सम्मिलित किया जाता है, जिनकी माप की जा सके। क्लार्क (J.I. Clarke) के शब्दों में ''जनसंख्या संघटन जनसंख्या के उन पक्षों को निरूपित करता है, जिसकी माप की जा सकती है।'' वास्तव में जनसंख्या संयोजन में मापक के रूप में वैसे घटकों का प्रयोग किया जाता है जिनके आधार पर विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के समूह में अंतर स्पष्ट किया जा सके।

जनसंख्या भूगोलवेत्ता किसी प्रदेश के जनसंख्या संयोजन के अध्ययन के लिए प्रमुख घटक के रूप में लिंग, आयु, ग्रामीण-नगरीय अनुपात, व्यवसाय, साक्षरता, भाषा जाति एवं धर्म इत्यादि का अध्ययन करते हैं। ये घटक क्षेत्र विशेष के जनसंख्या संयोजन को प्रदर्शित करते हैं एवं संयोजन अध्ययन से प्राप्त आँकड़े नियोजित विकास के लिए भी सहायक होते हैं।

1.3 लिंग संघटन (Sex Composition)

जनसंख्या का लिंग संघटन प्रायः एक अनुपात द्वारा व्यक्त किया जाता है। जिसे लिंग अनुपात (Sex Ratio) कहते हैं। भारत में यह अनुपात प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या के आधार पर दर्शाया जाता है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल 102.7 करोड़ जनसंख्या में से 53.1 करोड़ पुरूष और 49.6 करोड़ स्त्रियाँ है। इस प्रकार भारत का औसत लिंगानुपात 933 है जो इस बात का सूचक है कि भारत में पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या कम है।

नीचे की तालिका से स्पष्ट है कि 1901 के बाद भारत से लिंगानुपात सामान्यतः लगातार घटता जा रहा है।

भारत में लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या)

जनगणना वर्ष	लिंगानुपात
1901	972
1911	964
1921	955
1931	950
1941	945
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	926
2001	933

स्रोत - India 2008, A Reference Annual, P. 11

इस प्रकार दिये गए आँकड़े से पता चलता है कि 1901 से 1971 के बीच 70 वर्षों की अवधि में 1000 पुरूषों के पीछे स्त्रियों की संख्या में 42 की कमी आई। 1981 में पुरूष-स्त्री अनुपात में 1971 की अपेक्षा कुछ वृद्धि हुई। 20वीं शताब्दी का सबसे कम लिंगानुपात वर्ष 1991 में 926 था। जो 2001 में बढ़कर 933 हो गया।

भारत में लिंगानुपात कम होने का प्रमुख कारण अशिक्षा, लड़कियों की तुलना में लड़के का अधिक संख्या में जन्म, पुरूष प्रधान समाज, परम्परागत विचारधारावादी समाज, बाल-विवाह, भ्रूण हत्या विशेषकर स्त्री-शिशु की, दहेज प्रथा आदि सामाजिक कारक हैं।

सन् 2001 की जनगणना क अनुसार भारत से प्रति हजार पुरूष पर 933 स्त्रियों की औसत स्थिति है। इकाई-04 के पास 04 में भारत के लिंगनुपात का राज्यवार विवरण दिया गया है।

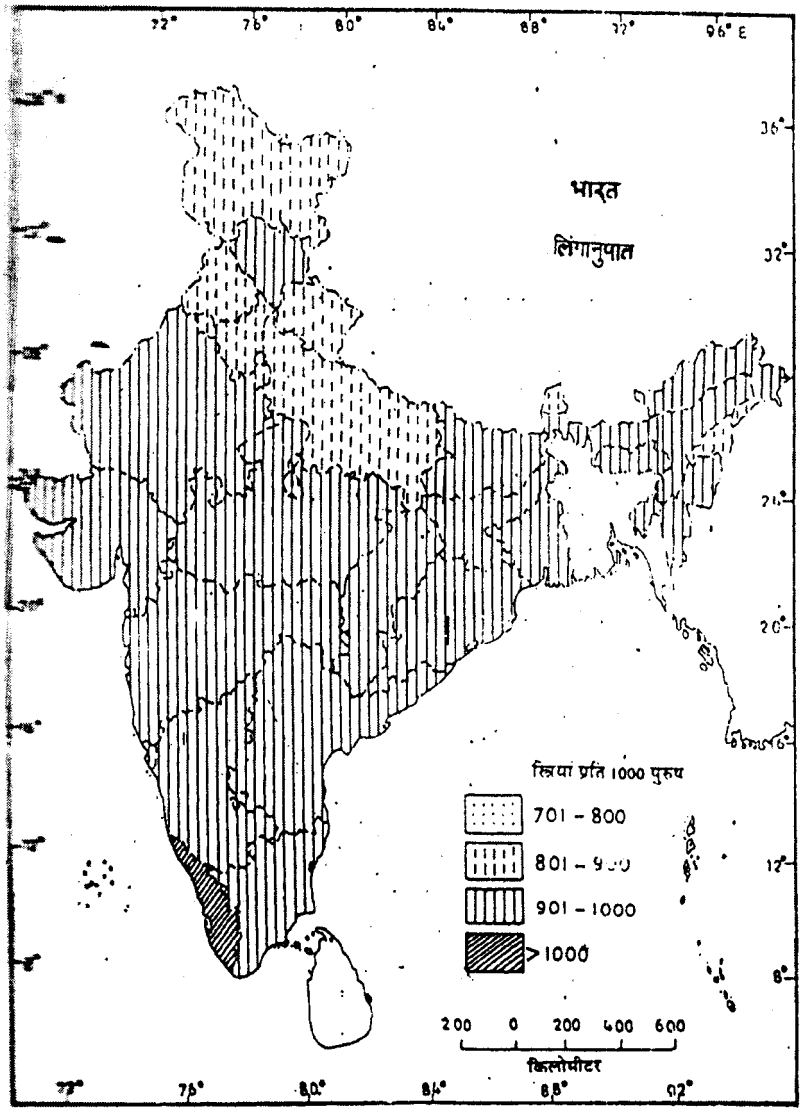

मानचित्र : भारत में लिंगानुपात प्रतिरूप (2001)

राज्यवार आँकड़े के देखने से पता चलता है कि सम्पूर्ण भारत में केरल और पाण्डिचेरी ही ऐसे राज्य हैं जहाँ स्त्रियों की संख्या पुरूषों से अधिक है। जबकि छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, मणिपुर, मेघालय और उड़ीसा में लिंगनुपात राष्ट्रीय औसत (933) से ऊपर है। जबकि अन्य राज्यों में लिंगानुपात राष्ट्रीय औसत से कम है। भारत में निम्नतम लिंगानुपात वर्ष 2001 के अनुसार चंडीगढ़ (733) में एवं दमन और द्वीप में (720) है।

1.4 आयु संघटन (Age Composition)

भारतीय जनगणना विभाग ने भारत की समस्त जनसंख्या को तीन प्रमुख वर्गों से विभाजि किया है। ये हैं :-

i) किशोर - 15 वर्ष से कम आयु।

ii) प्रौढ़ - 15-59 वर्ष के बीच के आयु वर्ग।

iii) वृद्ध - 60 एवं इससे अधिक वर्ष के आयु वर्ष।

प्रौढ़ वर्ग की जनसंख्या को 'श्रमजीवी' वर्ग कहा जाता है। भारत में जन्म दर तथा मृत्यु दर में तुलनात्मक रूप से कमी होने से जनसंख्या संघटन में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। 1971 की तुलना में 1991 में वंश की किशोर जनसंख्या का अनुपात घटा है। 1971 में किशोर जनसंख्या का प्रतिशत 42.0 था जो 1991 में घटकर 36,5% हो गया। इसके विपरीत 1971-1991 की अवधि में प्रौढ़ों का अनुपात 36.6 प्रतिशत से बढ़कर 40.9 प्रतिशत और वृद्ध का 6.0 प्रतिशत से बढ़कर 6.8 प्रतिशत हो गया। नगरों की तुलना में किशोर और बूढ़ों का अनुपात गाँवों में अधिक है। आगे के पाठ में इसके कारणों की चर्चा विस्तार से की जाएगी।

वर्ष 1991 की जनगणना से प्राप्त जनसंख्या के आँकड़ों के आधार पर आयु और लिंग को प्रदर्शित करनेवाला विरामिड से स्पष्ट होता है कि भारत जैसे देश में जन्म दर एवं शिशु मृत्यु दर अब भी काफी अधिक है, क्योंकि आयु में वृद्धि होने के साथ-साथ जनसंख्या के अनुपात में कमी होती जाती है। जो उच्च आयु वर्ग की कम जनसंख्या की ओर संकेत करता है। पिरामिड यह स्पष्ट करता है कि स्त्री और पुरुष दोनों की जनसंख्या का अधिकतम अनुपात 5-9 वर्ष के आयु वर्ग में है।

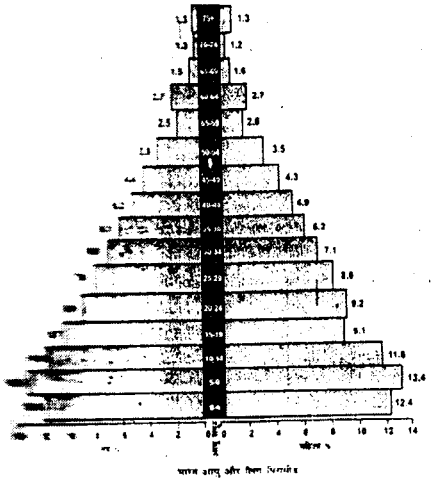

मानचित्र : भारत का आयु लिंग पिरामिड (1991 की जनसंख्या के आधार पर)

1.5 ग्रामीण नगरीय संघटन (Rural Urban Composition)

भारत मुख्यत: गाँवों का देश है। भारत की जनसंख्या का लगभग तीन-चौथाई भाग गाँव में रहता है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल 10287 लाख जनसंख्या का लगभग 72.22% भाग अर्थात 743 लाख गाँवों में तथा शेष 27.8% जनसंख्या नगरों में होती है।

ग्रामीण लोग अपनी व्यवसाय संरचना, जीवन-पद्धति, विचारों तथा सांसारिक दृष्टिकोण में नगर के लोगों से अलग होते हैं। गाँव के लोगों का सामाजिक संबंध घनिष्ठ होता है। वे प्राय: प्राथमिक व्यवसाय करते हैं दूसरी ओर नगरीय जीवन की गति तीव्र एवं सामाजिक संबंध औपचारिक होते हैं। नगर में रहने वाले लोग अपनी आजीविका, द्वितीय तथा तृतीय व्यवसायों से कमाते हैं जिसमें उद्योग, व्यापार, परिवहन तथा सेवाएँ प्रमुख हैं।

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार हिमाचल प्रदेश में सबसे अधिक 90-21% जनसंख्या ग्रामीण है। इसके बाद बिहार, सिक्किम, नागालैंड, त्रिपुरा, असम तथा उड़ीसा का स्थान आता है। इन सभी राज्यों में 80% से अधिक जनसंख्या ग्रामीण है। जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, अरूणाचल, मणिपुर, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ तथा दादरा व नगर हवेली में तीन चौथाई से अधिक लक्षद्वीप में 50 से 60 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है। न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या दिल्ली में है जहाँ 70% से भी कम जनसंख्या ग्रामीण है। इसके बाद चण्डीगढ़ का स्थान आता है जहाँ की लगभग 10% जनसंख्या ही गाँव में रहती है।

जहाँ तक भारत की नगरीय जनसंख्या का सवाल है 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 28.54 करोड़ अर्थात कुल जनसंख्या का लगभग 27.78% भाग नगरों में निवास करता है। ग्रामीण जनसंख्या के विपरीत नगरीय जनसंख्या का अनुपात लगातार बढ़ रहा है। सन् 1901 में भारत में जहाँ नगरीय जनसंख्या 2.59 करोड़ थी वही यह 2001 में बढ़कर 28.54 करोड़ हो गई। इस प्रकार 100 वर्षों में भारत की नगरीय जनसंख्या में 11 गुना वृद्धि हुई। औसत वार्षिक वृद्धि दर 10.04 प्रतिशत रही। ग्रामीण जनसंख्या की अपेक्षा नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण ग्रामीण जनसंख्या का नगरों में प्रवास है। 1980 के बाद नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर घटनी शुरू हो गई। इसे आगे की तालिका से स्पष्ट किया गया है। 1991-2001 की अवधि में यह केवल 31.3 प्रतिशत ही रही। उत्तर में चण्डीगढ़, दिल्ली और हरियाणा, उत्तरपूर्व में अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम और नागालैण्ड और दक्षिण में तमिलनाडु में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर अपेक्षाकृत अधिक थी। नगरीय जनसंख्या में उच्च वृद्धि दर अपेक्षाकृत छोटे राज्यों में देखी गई है जिसमें नगरीय जनसंख्या का अनुपात पिछली जनगणना वर्ष में कम था।

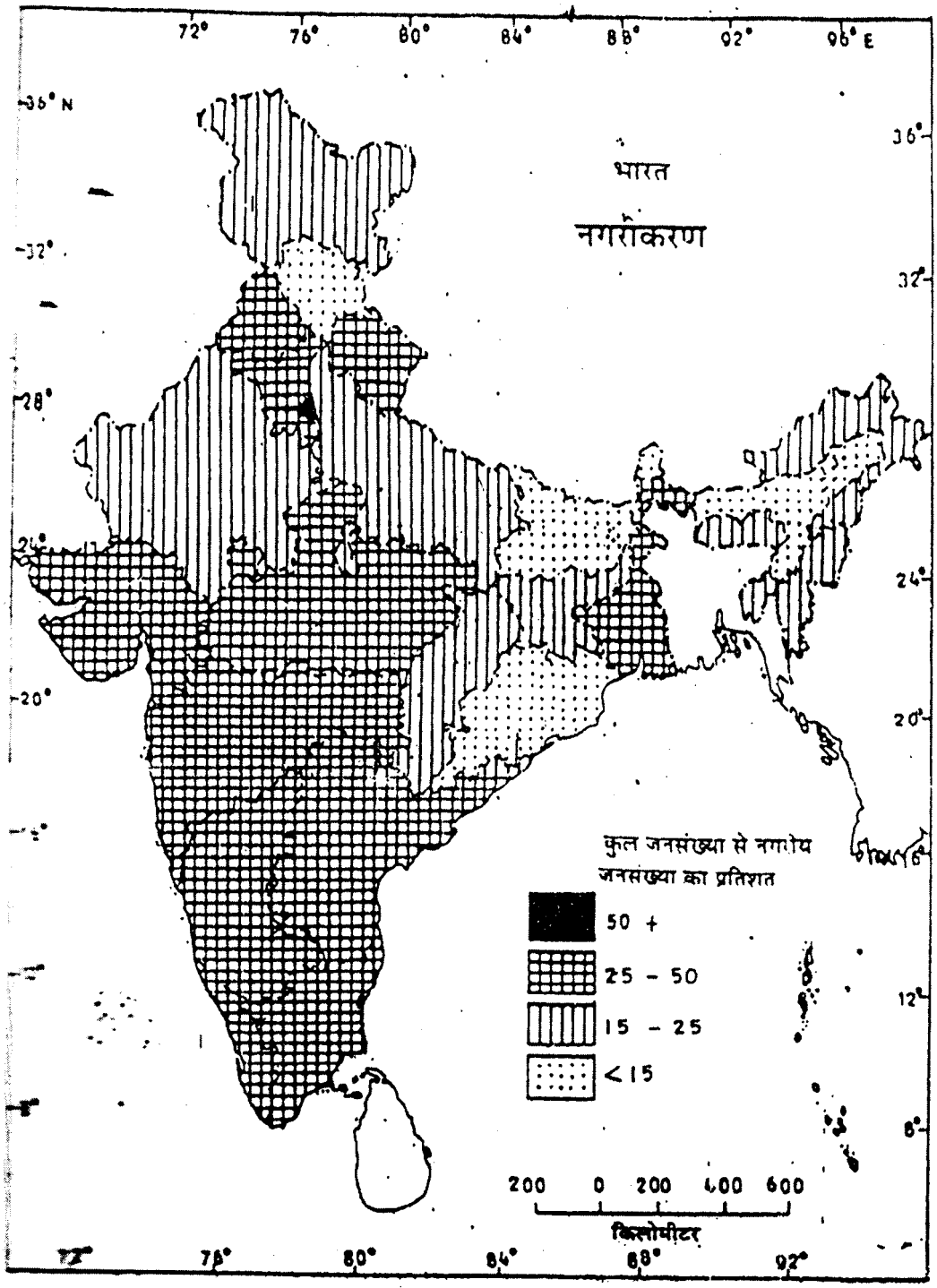

मानचित्र : भारत में नगरीकरण का प्रादेशिक प्रतिरूप (2001)

नीचे की तालिका में भारत में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति को देखा जा सकता है।

भारत में नगरीकरण की प्रवृत्तियाँ

वर्ष	नगरों की संख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	दक्षकीय वृद्धि (प्रतिशत)
1901	1827	10.85	---
1911	1815	10.29	0.35
1921	2949	11.18	8.27
1931	2072	11.99	19.12
1941	2250	13.86	31.96
1951	2843	17.29	41.42
1961	2365	17.97	26.41
1971	2590	19.91	38.23
1981	3378	23.34	46.14
1991	4689	25.71	36.47
2001	5161	27.78	31.13

स्रोत - भारत की जनगणना, 2001 का पेपर-2

1.6 आर्थिक संघटन (Economic Composition)

आर्थिक संयोजन या व्यवसाय का अध्ययन जनसंख्या संयोजन के अध्ययन में महत्वपूर्ण हो जाता है। किसी व्यक्ति के व्यवसाय का अर्थ इसके द्वारा किया गया व्यापार पेशा तथा काम का प्रकार है। मनुष्य द्वारा किए जाने वाले अनेक प्रकार के व्यवसाय हैं और उनका साधारण वर्गीकरण प्रस्तुत करना कठिन कार्य है। भारतीय जनगणना 1991 में भारत के कुल श्रमिक को दो उपवर्गों मुख्य और सीमान्त श्रमिक में विभक्त किया गया है। 6 माह या इससे अधिक दिन काम करनेवाले को मुख्य श्रमिक एवं वे जो 6 माह से कम कार्य किया उसे सीमान्त श्रमिक के वर्ग में रखा गया। मुख्य श्रमिकों को पुनः नौ व्यवसायिक वर्गों में विभक्त किया गय। ये हैं :-

i) कृषि।

ii) कृषि मजदूर।

iii) पशुपालन, वानिकी, मत्स्य ग्रहण, आखेट, रोपन फलोत्पादन तथा संबंधित व्यवसाय।

iv) खनन तथा आखनन।

v) उद्योग, प्रक्रमण सेवा तथा मरम्मत।

A) घरेलू उद्योग B) घरेलू उद्योग के अलावा।

vi) निर्माण।

vii) व्यापार तथा वाणिज्य।

viii) परिवहन तथा भंडारण।

ix) अन्य सेवाएँ।

उपर्युक्त में प्रथम चार वर्ग प्राथमिक क्रिया क्षेत्र के घटक है। पाँचवें एवं छठे वर्ग को द्वितीयक क्रिया श्रेणी में रखा गया है, एवं शेष तृतीयक क्रिया श्रेणी के घटक हैं। हमारी श्रमशक्ति का सर्वाधिक लगभग दो-तिहाई भाग कृषि में कार्यरत है। इसमें से लगभग 38.41% कृषक हैं एवं शेष कृषक मजदूर है। 10% से अधिक श्रम शक्ति उद्योग वर्ग की है। व्यापार तथा वाणिज्य में लगभग 7% श्रमशक्ति कार्यरत है।

लिंगानुसार स्त्री कामगारों का रूझान प्राथमिक क्षेत्र में अधिक है। कृषि कार्य में 71.9% स्त्री कामगार एवं 51.8% पुरूष कामगार लगे हुए हैं। जबकि गैर कृषि कार्यों में महिला कामगारों का प्रतिशत 47.8% है।

सन् 2001 की जनगणना में केवल चार वर्गों से संबंधित आँकड़े प्रकाशित किए गए। जिसे नीचे सारणी में दर्शाया गया है।

भारत में कामागरों की व्यवसायिक संरचना

प्रतिशत में (2001)

व्यवसाय	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री
कृषक	31.71	31.34	32.50
कृषि श्रमिक	26.69	20.82	39.43
घरेलू उद्योग	4.07	3.02	6.37
अन्य	37.58	44.72	21.70
कुल	100.00	100.00	

विभिन्न व्यवसाय में लगे लोगों के अनुपात में क्षेत्रीय स्तर पर भारी अंतर पाया जाता है। उदाहरण के लिए चंडीगढ़ में किसान केवल 0.47% है जबकि मुख्य कार्य अस्त्र जनसंख्या में नागालैड में यह 68.23% है। कुल कार्यरत जनसंख्या में कृषि श्रमिकों की संख्या आंध्रप्रदेश में सबसे अधिक 39.63%

है। जबकि न्युनतम चंडीगढ़ में जो मात्र 0.11% है। कृषक श्रमिक और किसान में विपरीत संबंध है। कृषक श्रमिक मुख्यत: समाज के कमजोर वर्ग से आते हैं जिन्हें वर्ष में अधिकतर दिन अपूर्ण रोजगार ही मिल पाता है।

1.7 साक्षरता संघटन (Literacy Compsotion)

साक्षरता वह गुण है जो किसी व्यक्ति को पढ़ने और लिखने की योग्यता प्रकट करती है। साक्षरता मनुष्य के सोच विचार एवं कार्य करने की क्षमता में वृद्धि करती है। यह मनुष्य के सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति को प्रगति की ओर ले जाती है।

जैसे-जैसे भारत की जनसंख्या बढ़ती गयी वैसे-वैसे साक्षर एवं निरक्षर लोगों की संख्या भी बढ़ती गई। वर्ष 2001 की जनगणना में भारत में साक्षर लोगों की संख्या में ऐतिहासिक परिवर्तन दर्ज किया गया है। इसलिए वर्ष 1991 से 2001 के दर को साक्षरता दशक (Literacy decale) का नाम दिया गया है। नीचे की तालिका में भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के दशक में बढ़ती साक्षरता की दर को दर्शाया गया है।

भारत में साक्षरता दर (1991-2001)

जनगणना वर्ष	व्यक्ति	पुरूष	महिला
1951	18.33	27.16	8.86
1961	28.30	40.40	15.35
1971	34.45	47.96	21.97
1981	43.57	56.38	30.76
1991	52.21	64.13	39.29
2001	64.84	75.26	53.67

स्रोत- India 2008, A Reference Annual, P.11

उपर्युक्त तालिका में 1951-1961 एवं 1971 में पाँच वर्ष या उससे अधिक आयु की जनसंख्या एवं 1981, 1991 एवं 2001 में सात वर्ष या उससे अधिक वर्ग के जनसंख्या को समिलित किया गया है। भारत में साक्षरता 1951 में 18.33% से बढ़कर 2001 में 64.84% हो गया अर्थात इस 50 वर्ष की अवधि में लगभग साक्षरता दर में 3.5 से अधिक की वृद्धि हुई है। 2001 में पुरूषों एवं स्त्रियों की साक्षरता दर क्रमश: 75% और 56% थी अर्थात 2001 में कुल जनसंख्या की चौथाई से अधिक पुरूष एवं आधी से अधिक महिलाएँ साक्षर थीं।

भारत के साक्षरता प्रतिरूप में प्रादेशिक स्तर पर काफी भिन्नता है एक ओर जहाँ केरल सबसे अधिक साक्षरता दर वाला राज्य है वही बिहार में साक्षरता दर निम्नतम है। आगे के पाठ में साक्षरता से संबंधित राज्यवार आंकड़े प्रस्तुत किये गये हैं। जिनके सहायता से छात्र क्षेत्रीय स्तर पर साक्षरता के वास्तविक

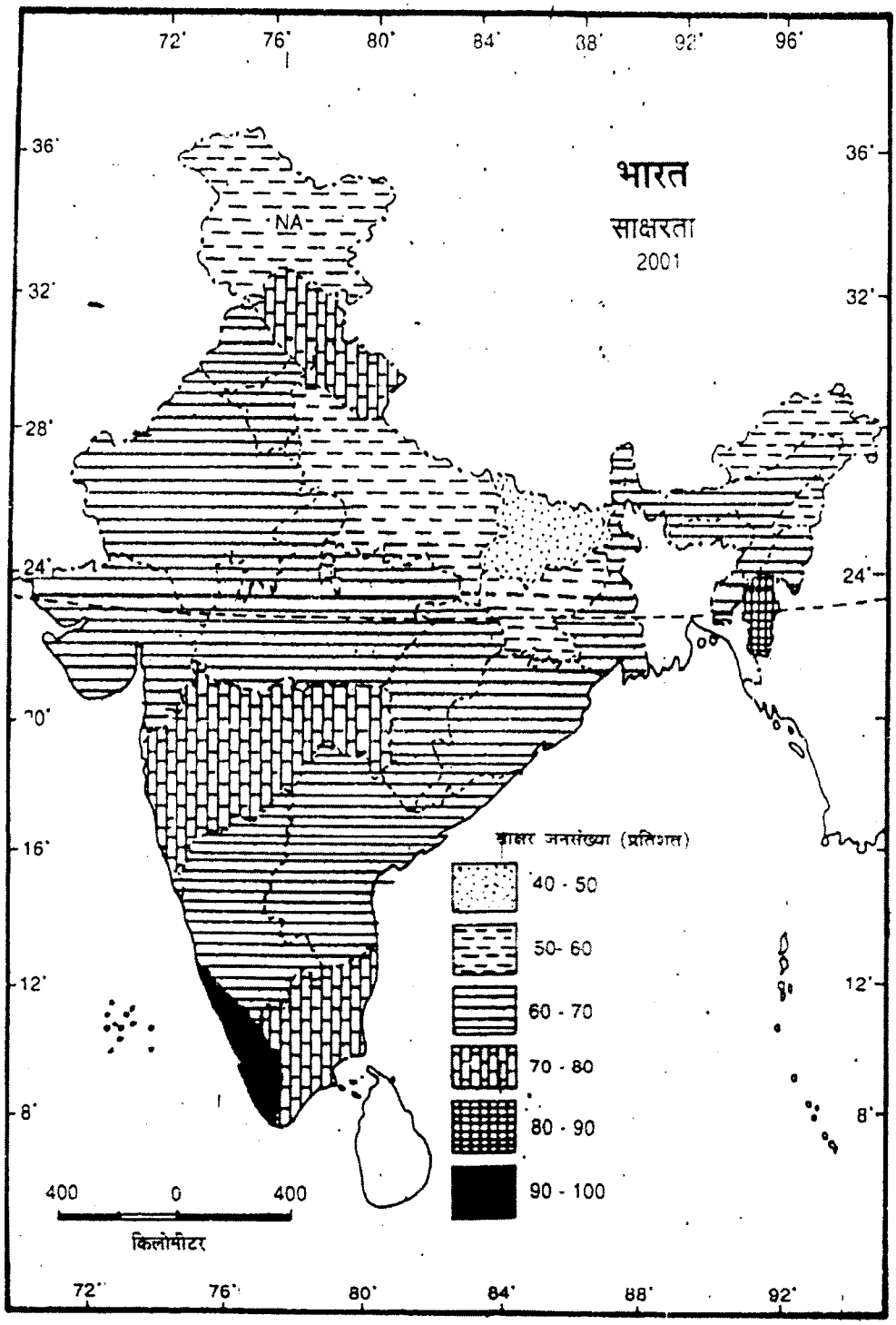

मानचित्र : भारत में साक्षरता प्रतिरूप (2001)

स्थिति को जान सकते हैं विभिन्न राज्यों के साक्षरता आंकड़ों के आधार पर हम देश के विभिन्न राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को तीन वर्गों में रख सकते हैं- ये हैं

(1) उच्च साक्षरता वाले प्रदेश — ऐसे प्रदेशों की 75% या उससे अधिक जनसंख्या साक्षर है। इसके अंतर्गत केरल, मिजोरम, लक्षद्वीप, गोवा, दिल्ली, चंडीगढ़, पांडिचेरी, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, दमन एवं लक्षद्वीप महाराष्ट्र एवं हिमाचल प्रदेश हैं।

(2) मध्यम साक्षरता वाले प्रदेश — इन प्रदेशों की 60 से 75% जनसंख्या साक्षर है। ये है त्रिपुरा, तमिलनाडु, उतराखंड, गुजरात, पंजाब, सिक्किम पश्चिम बंगाल मणिपुर हरियाणा, कर्नाटक, नागालैंड, छत्तीसगढ, असम, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, मेघालय, आंध्र प्रदेश, राजस्थान और दादरा एवं नगर हवेली।

(3) निम्न साक्षरता वाले प्रदेश — ऐसे प्रदेशों के अन्तर्गत वैसे राज्यों के सम्मिलित किया गया है जहाँ कि 60% से कम जनंसख्या साक्षर है। ये है उत्तरप्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, जम्मु एवं काश्मीर, झारखंड और बिहार।

1.8 भाषाई संघटन (Linguistic Composition)

भारतीय जनंसख्या के यहाँ के मूल निवासी नहीं है। यहाँ विभिन्न प्रकार के नृ-जातीय वर्ग, आकार बसे जो अपने साथ विभिन्न प्रकार की भाषाएँ एवं बोलियाँ ले आये।

सन् 1961 की जनगणना के समय भाषाओं से संबोधित विस्तृत जानकारी एकत्र करने का प्रयास किया गया। 1961 की जनणना के समय भारत में 1652 प्रकार की भाषाओं की सूचीबद्ध किया गया। परन्तु इसमें 94% की भाषाओं में प्रत्येक को बोलनेवाले लोगों की संख्या 10,000 से भी कम थी। देश की 97% जनसंख्या केवल 23 भाषाएँ बोलती है। वर्तमान में भारतीय संविधान की आठवें अनुच्छेद में अंग्रेजी के अलावा 18 भाषाओं के नाम दिये गये हैं। नीचे की तालिका में वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित भाषाओं तथा मातृभाषा के रूप में प्रयोग करनेवाली जनसंख्या का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

भारत : 1991 में अनुसूचित भाषाओं की तुलनात्मक क्षमता

8वीं अनुसूची में शामिल भाषाएँ	मातृभाषा के रूप में बोलने वालों की संख्या (करोड़ में)	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
हिन्दी	33.73	40.42
बंगला	6.96	8.30
तेलगु	6.60	7.87
मराठी	6.25	7.43
तामिल	5.30	6.32
उर्दू	4.34	5.18

गुजराती	4.07	4.85
कन्नड़	3.28	3.91
मलियालम	3.04	3.62
उड़िया	2.81	3.37
पंजाबी	2.34	2.79
असमिया	1.31	1.56
हिन्दी	0.21	0.25
कोकणी	0.18	0.21
मणिपुरी	0.127	0.15
कश्मिरी	0.006 (60,000)	0.01
संस्कृत	0.005 (50,000)	0.01

स्रोत - i) Census of India 1991 & ii) India, 2002 A Reference Annual

उपर्युक्त तालिका में स्पष्ट है कि देश की कुल जनसंख्या का 40.42% हिन्दी भाषा का प्रयोग करती है। इसके बाद बंगला का स्थान आता है। देश में बोली जानेवाली अन्य भाषाओं में तेलगू, मराठी, तमिल, उर्दू, गुजराती, कन्नड़, मलियालम, उड़ीया, पंजाबी और असमिया है। हिन्दी और अंग्रेजी को राज्य भाषाओं की मान्यता प्राप्त है।

1.9 जातीय संघटन (Caste Composition)

भारत में बहुसंख्यक हिन्दू समाज अनेक जातियों और उपजातियों में भी विभक्त है। प्राचीन भारतीय समाज कार्य संरचना के आधार पर चार वर्ग में विभक्त था। ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य एवं शूद्र। ब्राहमण का कार्य अध्यापन तथा पूजा पाठ कराना, क्षत्रिय का काम शत्रुओं से समाज को सुरक्षा प्रदान करना। वैश्य का कार्य कृषि, व्यापार तथा वाणिज्य एवं शूद्रों का काम इन तीनों वर्गों की सेवा करना था। बाद में जन्म के आधार पर जातीयों का निर्धारण होने लगा और ये कई उपजातियो में भी विभक्त होने लगे। मुसलमानों एवं सिक्खों की भी सीमित उपजातियाँ हैं।

स्वतंत्र भारत के संविधान के अनुसार समस्त जन संख्या को चार प्रधान जातीयों में विभक्त किया गया ये निम्नलिखित हैं -

(i) स्वर्ण जातियों (Forward Caste) :- इसमें सभी समुदायों की उच्च जातियों (जिनका आर्थिक एवं सामाजिक एवं शैक्षिक स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा था) सम्मिलित किया गया।

(ii) अनुसूचित जातियाँ (Schedule Caste) :- संविधान की धारा 341 के अन्तर्गत सभी अस्पृश्य जातियाँ इस वर्ग में समाहित की गई। देश की 16.33% जनसंख्या इस वर्ग में आती है ।

(3) अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribe)—इसके अंतर्गत देश के 354 चिंहित जनजातियों (Tribes) को रखा गया। देश की जनसंख्या का 8.0% इसमें सम्मिलित है।

(4) पिछड़ी जाति/अन्य पिछड़ा वर्ग (Backward Castes/Other Backward Caste)— इसके अंतर्गत उन जातियों को सम्मिलित किया गया जो सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक रूप से कमजोर है। किंतु केवल वही लोग जो अनुसूचित जातियों या जनजातियों के अंतर्गत शामिल नहीं है।

यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि भारत जैसे देश में लम्बे समय से जातीय आधार पर जनगणना नहीं होने के कारण इसका वास्तविक आँकड़ा उपलब्ध नहीं है।

1.10 धार्मिक संघटन (Religious Composition)

सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है जिसका दर्शन मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करता है।

भारत में हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा सिक्ख जैसे धर्मों का जन्म हुआ। इस्लाम तथा ईसाई धर्म के लोग यहाँ ऐतिहासिक काल में ही आकर बसे। इसके अलावा यहूदी एवं पारसी धर्म के लोगों का आगमन भी अल्प संख्या में विदेशों से हुआ है। इस प्रकार भारत में कुल सात धर्म है। इन सभी धर्मों का भारत के सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। खान-पान, रहन-सहन, बस्तियाँ, भवन-निर्माण, कला एवं रीति-रिवाज सभी पहलुओं पर इसका असर देखा जा सकता है। परन्तु भारत एक धर्म-निरपेक्ष देश है। जहाँ सभी धर्मों के लोग साथ-साथ रहते हैं। इस प्रकार यहाँ धार्मिक विविधता में भी एकता है। भारत की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

1.11 निष्कर्ष (Summing-up)

भारत के लिंगानुपात एवं आयु संरचना के अध्ययन से पता चलता है, भारत जैसे देश का औसत लिंगानुपात 933 है जो पुरुषों के पक्ष में है लेकिन, ग्रामीण नगरीय, सामाजिक संरचना एवं राज्यानुसार लिंगानुपात में असमानता पाया जाता है। नगरों में पुरुषों का अनुपात अधिक है जबकि गाँवों में तुलनात्मक रूप से स्त्रियों की संख्या अधिक है। सामाजिक संरचना के आधार पर इसाईयों में स्त्रियों का अनुपात सर्वाधिक है जबकि सिक्ख समुदाय में लिंगानुपात निम्नतम है। राज्यानुसार केरल में लिंगानुपात कम होने का सबसे महत्वपूर्ण कारण सामाजिक कुरीतियाँ एवं परम्परागत विचारधारा है।

अगर हम आयु संरचना के आँकड़ों पर गौर करें तो पता चलता है कि भारत में बाल आयु वर्ग एवं युवा वर्ग की बहुलता है। इसप्रकार भारत को युवाओं का देश कहा जा सकता है। जबकि, यहाँ वृद्ध आयु वर्ग का अनुपात सबसे कम हैं।

विभिन्न आयु वर्ग एवं लिंगानुपात पर साक्षरता का स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। 2001 के अनुसार देश की आधी से अधिक महिलाएँ एवं तीन-चौथाई से अधिक पुरुष साक्षर हैं जो हमारी महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं।

1.12 अभ्यास प्रश्न (Question for Exercise)

(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(1) लिंगानुपात परिकलन की विधियों का उल्लेख करें।

(2) आयु संरचना के विश्लेषण की विधियों का उल्लेख करें।

(3) लिंग संयोजन एवं आयु संयोजन से क्या समझते हैं ?

(4) लिंगानुसार भारत की साक्षरता पर प्रकाश डालें।

(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(1) भारत में जनसंख्या के लिंग संरचना को स्पष्ट करें।

(2) भारत में जनंसख्या के आयु संरचना को स्पष्ट करें।

(3) आयु-लिंग विरालेड पर टिप्पणी लिखिए।

1.13 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) जनसंख्या भूगोल - डॉ० एस० डी० मौर्य

(2) जनसंख्या भूगोल - डॉ० रामदेव त्रिपाठी

(3) सामाजिक भूगोल - डॉ० एस० डी० मौर्य

(4) Geography of Population – R.C.Chandana

(5) भारत का भूगोल - विरेन्द्र सिंह चौहान

(6) भारत का वृहद् भूगोल - डा० पी० आर० चौहान और डॉ० महातम प्रसाद।

❖❖❖

इकाई-4 # भारत में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना (Occupational Structure of Population in India) पाठ - 2

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

2.0 उद्देश्य (Objective)

2.1 परिचय (Introduction)

2.2 व्यवसाय की परिभाषा (Definition of Occupation)

2.3 क्रियाशील जनसंख्या (Working Population)

2.4 अक्रियाशील जनसंख्या (Non-Working Population)

2.5 श्रमिक की परिभाषा (Definition of Worker)

2. 6 भारत में कार्य सहभागिता दर (Work Participation Rate in India)

2.7 क्रियाशील जनसंख्या का व्यवसायिक वर्गीकरण (Occupational Classification of Eorking Population)

2.8 भारत की व्यावसायिक संरचना (Occupational structure of India)

2.9 निष्कर्ष (Summing-up)

2.10 अभ्यास प्रश्न (Question for Exercise)

(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

2.11 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

2.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को निम्नलिखित बिंदुओं पर विस्तार से जानकारी देना है :-

- व्यवसाय का अर्थ एवं परिभाषा
- भारत में कार्य क्रियाशील, सीमान्त एवं अक्रियाशील जनसंख्या का विवरण।
- भारत में व्यवसाय के प्रकार एवं स्त्री-पुरूष की कार्य सहभागिता दर।
- भारत में विभिन्न व्यवसाय में लगे लोगों का प्रतिशत एवं राज्यानुसार वितरण।

2.1 परिचय (Introduction)

किसी क्षेत्र अथवा प्रदेश की व्यावसायिक संरचना से तात्पर्य उस क्षेत्र अथवा देश में विभिन्न कार्यों में संलग्न जनसंख्या से होता है। देश के व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत कृषि, व्यापार, रोजगार, उद्योग-धंधे, यातायात, राष्ट्रीय आय आदि का ध्ययन किया जाता है। जनसंख्या का यह आर्थिक पक्ष उसकी मात्रात्मक पक्ष एवं गुणात्मक संरचना से घनिष्ठ रूप से संबंधित होता है तथा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आर्थिक संरचना को प्रभावित करता है। **प्रो० रिचर्ड गिल** के अनुसार ''आर्थिक विकास एक यांत्रिक प्रक्रिया के साथ-साथ मानवीय उपक्रम भी है जनका प्रतिफल अन्ततः इसे क्रियान्वित करने वाले लोगों की कुशलता, गुण एवं प्रवृतियों पर निर्भर करता है।'' इस प्रकार की विवेचना से स्पष्ट है कि मानव साधन एवं साध्य दोनों है। इस प्रकार भूगोल में व्यावसायिक अथवा आर्थिक संरचना का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। विभिन्न प्रकार की आर्थिक संरचना भी जनांकिकीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि विविध कारकों से प्रभावित तथा नियंत्रित होती है। अतः व्यावसायिक संरचना में भी पर्याप्त प्रादेशिक भिन्नता पायी जाती है।

2.2 व्यवसाय की परिभाषा (Definition of Occupation)

काल एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तनशील होते रहने के कारण व्यवसाय की संकल्पना एक गत्यात्मक विचार है। **आर० एन० सिंह** एवं **एस० डी० मौर्य** ने 'भौगोलिक पारिभाषिक शब्दकोश (2004) में व्यवसाय की व्याख्या इस प्रकार की है-

''व्यवसाय जीविका की प्राप्ति तथा एक निश्चित सामाजिक स्तर को बनाये रखने के उद्देश्य से भारत द्वारा अपनायी गयी सतत क्रिया होती है। यह विशिष्ट आर्थिक क्रिया हे जिससे कोई व्यक्ति अपनी जीविका अर्जित करता है। अतः सभी आर्थिक क्रियाएँ व्यवसाय का अंग होती है। आखेट, पशुचारण, मत्स्यपालन, वनोद्योग, कृषि, खनन, उद्योग, परिवहन सेवाएँ आदि प्रमुख मानव व्यवसाय हैं। इस प्रकार व्यवसाय व्यक्ति की आर्थिक आय का सामान्य स्थायी स्रोत होता है और उसके द्वारा व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण होता है।

वास्तव में मानव व्यवसाय का निर्धारण में दो प्रमुख कारकों की भूमिका होती है-

(i) आंतरिक कारक (Internal Factors) और

(ii) बाह्य कारक (External Factors)।

आंतरिक कारक के अंतर्गत मनुष्य के शारीरिक और मानसिक क्षमता जैसे आयु, लिंग, स्वास्थ्य शिक्षा आदि आते हैं। जबकि बाह्य कारकों से भौतिक जैविक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक दशाओं को सम्मिलित किया जाता है, जो परस्पर एक दूसरे से अंतःरसंबंधित होते हैं।

2.3 क्रियाशील जनसंख्या (Working Population)

इसके अंतर्गत उन सभी व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया है, जो आर्थिक दृष्टि से उत्पादक का कार्य करते हैं तथा उससे आय अथवा आजीविका प्राप्त करते हैं। इस प्रकार स्वयं नियोजित कृषक व कृषि श्रमिक से उद्योग, व्यापार, परिवहन एवं सेवाओं में कार्यरत एवं सभी शासकीय व कर्मचारी वर्ग क्रियाशील जनसंख्या की श्रेणी में आते हैं। जो अपने कार्य के द्वारा आजीविका या आय प्राप्त करते हैं। इसके अन्तर्गत 15-60 वर्ष की आयु वर्ग के स्त्री-पुरूष सम्मिलित होते हैं। अत: इसे सक्रिय आयु वर्ग (Active Age Group) भी कहते हैं। इस वर्ग की जनसंख्या का वैसा भाग जो अपंगता, बीमारी आदि के कारण कार्य करने में अक्षम होते हैं, सक्रिय जनसंख्या के अंग नहीं माने जाते हैं।

2.4 अक्रियाशील जनसंख्या (Non-working Population)

मानव शक्ति (Man Power) का वह भाग जो आर्थिक कार्यों में सम्मिलित नहीं होता है इसे अक्रियाशील जनसंख्या कहते हैं। इसके अन्तर्गत बच्चे बूढ़े, अपंग आदि आश्रितों के साथ-साथ वैसे सभी व्यक्ति सम्मिलित हैं जो किसी भी प्रकार का उत्पादक कार्य नहीं करते। जैसे छात्र-छात्राएँ, पत्नियाँ, पेंशनभोगी, भिखारी, किरायाभोगी, बेरोजगार आदि।

2.5 श्रमिक की परिभाषा (Definition of Worker)

भारतीय जनगणना विभाग ने व्यावसायिक संरचना से संबंधित सूचनाओं का संकलन 1961 से प्रारंभ किया। लेकिन, यह आँकड़ा विवादित रहा। वर्ष 1981 में जनगणना से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर मुख्य श्रमिक एवं सीमान्त श्रमिक की अवधारणा सामने लाया गया।

भारतीय जनगणना 1991 में कुल श्रमिकों को दो उपवर्गों में विभक्त किया गया है। ये हैं-

(i) मुख्य श्रमिक (Main Workers)

(ii) सीमान्त श्रमिक (Marginal Workers)

उल्लेखनीय है कि जिस श्रमिक ने गणना के पूर्ववर्ती वर्ष में 6 माह और 183 दिन या इससे अधिक काम किया था उसे मुख्य श्रमिक और जिसने 6 माह से कम दिन का काम किया था उसे सीमान्त श्रमिक माना गया।

2.6 भारत में कार्य सहभागिता दर (Work Participation Rate in India)

क्रियाशील जनसंख्या को कार्य शक्ति (Working Force) कहा जाता है। देश की कुल जनसंख्या का जितना प्रतिशत कार्य में संलग्न होता है उसे कार्य सहभागिता दर कहते हैं। इसे निम्नलिखित सूत्र से प्राप्त किया जाता है।

$$\text{कार्य सहभागिता दर} = \frac{\text{कार्यशील जनसंख्या}}{\text{कुल जनसंख्या}} \times 100$$

भारत में कुल एवं राज्यानुसार कार्य सहभागिता दर प्रतिशत में

(2001)

केन्द्र शासित प्रदेश	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री
1. मिजोरम	52.6	57.3	47.5
2. दादर नगर हवेली	51.8	62. 3	38.7
3. हिमाचल प्रदेश	49.2	54.6	43.7
4. सिक्किम	48.6	57.4	38.6
5. छत्तीसगढ़	46.5	52.8	40.6
6. दमन एवं द्वीप	46.0	65.5	18.6
7. आंध्रप्रदेश	47.8	56.2	35.1
8. तमिलनाडु	44.7	57.6	31.5
9. कर्नाटक	44.5	56.6	32.0
10. अरूणाचल प्रदेश	44.0	50.6	36.5
11. मणिपुर	43.6	48.1	39.0
12. मध्यप्रदेश	42.7	46.7	42.4
13. नागालैंड	42.6	46.7	38.1
14. महाराष्ट्र	42.5	53.3	30.8
15. राजस्थान	42.1	50.0	33.5
16. गुजरात	41.9	54.09	27.9
17. मेघालय	41.8	48.3	35.1
18. हरियाणा	39.6	50.3	27.2
19. उड़ीसा	38.8	52.5	54.7
20. गोवा	38.8	54.6	22.4
21. अण्डमान निकोबार द्वीप समूह	38.3	56.6	16.6

22. चण्डीगढ़*	37.8	56.1	54.2
23. पंजाब	3.75	353.6	19.1
24. झारखंड	37.5	48.0	26.4
25. जम्मू कश्मीर	37.0	50.0	22.5
26. उत्तराखंड	36.9	46.1	27.3
27. पश्चिम बंगाल	36.8	54.0	18.3
28. त्रिपुरा	36.2	60.6	31.1
29. असम	35.8	49.9	20.4
30. पांडिचेरी	35.2	53.1	17.2
31. बिहार	33.7	43.4	18.8
32. दिल्ली	32.8	52.1	9.4
33. उत्तरप्रदेश	32.5	46.8	16.5
34. केरल	32.3	60.2	15.4
35. लक्षद्वीप	25.3	42.4	7.3

स्रोत- Census of India 2001, Series 1 Primary Census Abstract

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत में कार्य दर 39.1% है। जिसमें पुरूष जनसंख्या का 51.7% विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में संलग्न है जबकि मात्र 25.6% स्त्रियाँ ही आर्थिक क्रिया में अपना योगदान दे रही है। इसका कारण भारतीय समाज में स्त्रियों की साक्षरता दर अपेक्षाकृत निम्न है और अधिकांश घरेलू कार्यों एवं परिवार के सदस्यों की देखरेख करने में अपना योगदान देती है। दूसरी ओर अधिकांश समाज में स्त्रियों का घर से बाहर जाकर नौकरी करना अच्छा नहीं माना जाता है।

विभिन्न राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में कार्य सहभागिता दर से पर्याप्त असमानताएँ हैं। उच्चतम कार्य सहभागिता दर वाले राज्य मिजोरम (52.6 प्रतिशत) है। जबकि दादरा नगर हवेली, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, छत्तीसगढ़, दमन व द्वीप और आंध्रप्रदेश में 45% से अधिक कार्य सहभागिता दर पायी जाती है। निम्नतम कार्य सहभागिता दर वाला राज्य लक्षद्वीप है। पुरूषों का सबसे अधिक कार्य सहभागिता दर दमन व क्षेप में (47.5&) एवं स्त्री का सर्वाधिक (47.5%) मिजोरम में है। लक्षद्वीप में स्त्रियों की कार्य सहभागिता दर निम्नतम (7.3%) है।

2.7 क्रियाशील जनसंख्या का व्यवसायिक वर्गीकरण (Occupational Classification of Working Population)

व्यवसाय का अर्थ किसी व्यक्ति के द्वारा किए गये व्यापार, पेशा तथा काम के प्रकार से है। मनुष्य द्वारा किए गऐ अनेक प्रकार के व्यवसाय और उसका साधारण वर्गीकरण प्रस्तुत करना कठिन कार्य है। वर्ष 1971 की जनगणना के समय व्यवसायों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया :-

प्राथमिक क्रिया (Primary activity)
- (i) कृषि
- (ii) कृषक मजदूर
- (iii) पशुपालन, वानिकी, मत्स्य ग्रहण, आखेट, रोपण फलोधान तथा संधित व्यवसाय
- (iv) खनन तथा आखनन

द्वितीयक क्रिया (Secondary activity)
- (v) उद्योग, प्रक्रमण, सेवा तथा मरम्मत
  (क) घरेलू उद्योग (ख) घरेलू उद्योग के अतिरिक्त
- (vi) निर्माण

तृतीयक क्रिया (Tertiary activity)
- (vii) व्यापार तथा वाणिज्य
- (viii) परिवहन तथा भंडारण
- (ix) अन्य सेवाएँ।

सन 1991 की जनगणना में निम्नलिखित चार वर्गों से संबंधित आकड़े ही प्रकाशित किए गए। ये हैं:-

(i) कृषक

(ii) कृषक मजदूर

(iii) घरेलू उद्योग कार्यकर्त्ता

(iv) अन्य सेवा कार्यकर्त्ता।

परंतु 1991 की जनगणना में फिर से नौ व्यवसायिक वर्गों का प्रयोग किया गया और नौ श्रमिक वर्गों से संबंधित आँकड़ों का प्रकाशन किया गया।

सन् 2001 में 1981 के वर्गीकरण को फिर से अपनाया गया और इसमें भी चार वर्गों से संबंधित आँकड़ें ही प्रकाशित किए गए जिसे आगे की तालिका में दिया गया है।

2.8 भारत की व्यावसायिक संरचना (Occupational Structure in India)

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि वर्ष 1981 में पहली बार मुख्य श्रमिकों को केलव चार क्रियाओं के आधार पर विभक्त किया गया एवं 2001 में इन्ही वर्गों को आधार बताया गया। ये हैं :-

(i) काश्तकार/कृषक (Cultivators)

(ii) खेतिहर/कृषक मजदूर (Agricultural workers)

(iii) पारिवारिक/घरेलू उद्योगकर्मी (Household industry workers) और

(iv) अन्य कामगार (Other workers)

(i) कृषक - कृषक का सर्वाधिक प्रतिशत हिमाचल प्रदेश, नागालैण्ड, अरूणाचल प्रदेश, राजस्थान, मिजोरम, उत्तराखण्ड, सिक्किम आदि राज्यों में पाया जाता है। जबकि दिल्ली, चण्डीगढ़, लक्षद्वीप आदि राज्यों में कृषक का प्रतिशत 1.0% से भी कम है।

(ii) कृषक मजदूर - खेतिहर मजदूर की संख्या कृषि प्रधान बड़े राज्यों में अधिक है। इसका उच्चतम प्रतिशत बिहार (48.0) में पाया जाता है। इसके बाद क्रमशः आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, लक्षद्वीप में यह 1.0 से भी कम है।

(iii) घरेलू उद्योग – घरेलू उद्योग कर्मियों का प्रतिशत मणिपुर में सर्वाधिक (10.3) है। 5 प्रतिशत से अधिक घरेलू उद्योग वाले प्रदेश में जममू-कश्मीर, पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु, लक्षद्वीप तथा अण्डमान निकोबार द्वीप समूह है।

(iv) अन्य कामगार - वैसे प्रदेश जहाँ द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाओं का विकास अपेक्षाकृत अधिक हुआ है अन्य कामगारों का प्रतिशत अधिक पाया जाता है। चण्डीगढ़ (98.1) में यह सर्वाधिक है। इसके बाद दिल्ली (97.7%) का स्थान आता है। अन्य कामगारों का प्रतिशत दमन एवं दीप, लक्षद्वीप, अण्डमान एवं निकोबार, पाण्डिचेरी और केरल में 70.0 प्रतिशत से अधिक है। जबकि बिहार एवं मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में यह निम्नतम है।

भारत में कामगारों की व्यावसायिक संरचना प्रतिशत में

(2001)

व्यवसाय	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री
कृषक	31.71	31.34	32.50
कृषक श्रमिक	26.69	20.82	39.43
घरेलू उद्योग	4.07	3.02	6.37
अन्य	37.58	44.72	21.70
कुल	100.00	100.00	100.00

यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि कृषि कामगारों का अनुपात घट रहा है। वर्ष 1971 में यह 69.49% था जो 2001 में घटकर 58.4% रह गया। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि घरेलूउद्योग का महत्व बढ़ा है। 1971 के 3.52% से बढ़कर यह 2001 में 4.07% हो गया। गैर कृषि क्षेत्र में यह परिवर्तन अच्छे संकेत माने जा सकते हैं।

भारत में राज्यानुसार कार्यात्मक वर्गों का विवरण नीचे की तालिका में दिया गया है :-

भारत में राज्यानुसार कार्यात्मक वर्गों का प्रतिशत विवरण (2001)

राज्य केंद्र शासित प्रदेश	काश्तकार	खेतिहर मजदूर	पारिवारिक उद्योगकर्मी	अन्य
1. हिमाचल प्रदेश	67.3	3.1	1.8	29.8
2. नागालैंड	63.7	3.6	2.6	29.0
3. अरूणाचल प्रदेश	57.8	3.9	1.3	37.0
4. राजस्थान	55.3	10.6	2.9	31.2
5. मिजोरम	54.9	5.7	1.5	37.9
6. उत्तराखंड	50.1	8.3	2.3	39.3
7. सिक्किम	49.9	6.5	1.6	42.0
8. मेघालय	48.1	17.7	2.2	32.0
9. छत्तीसगढ़	44.5	31.9	2.1	21.5
10. मध्यप्रदेश	42.8	28.7	4.0	24.5
11. जम्मू कश्मीर	42.	4 5.6	6.2	44.8
12. उत्तरप्रदेश	41.1	24.8	5.6	28.5
13. मणिपुर	40.2	12.0	10.3	36.6
14. असम	39.1	13.2	3.6	44.0
15. झारखंड	38.5	28.2	4.3	29.1
16. हरियाणा	36.0	15.3	2.6	46.1
17. दादर नगर हवेली	34.6	12.9	0.7	51.8
18. उड़ीसा	29.8	35.0	4.9	30.3
19. बिहार	29,3	48.0	3.9	18.8

20. कर्नाटक	29.2	26.5	4.1	40.2
21. महाराष्ट्र	28.7	26.3	2.6	42.4
22. गुजरात	27.3	24.3	2.0	46.4
23. त्रिपुरा	27.90	23.8	3.0	46.1
24. पंजाब	22.6	16.3	3.8	57.4
25. आंध्रप्रदेश	22.5	39.6	4.7	33.1
26. पश्चिम बंगाल	19.2	25.0	7.4	148.5
27. तमिलनाडु	18.4	31.0	5.4	47.3
28. अण्डमान निकोबार द्वीप समूह	15.8	3.8	5.2	75.3
29. गोवा	9.6	6.8	2.8	80.7
30. केरल	7.0	15.8	3.6	73.6
31. दमन एवं द्वीप	5.5	1.8	1.6	91.0
32. पांडिचेरी	3.2	21.1	1.9	73.9
33. दिल्ली	0.8	0.3	3.1	97.7
34. चण्डीगढ़*	0.6	0.2	1.1	98.1
35. लक्षद्वीप	0.0	0.0	5.9	94.1
अखिल भारतीय	31.71	26.69	4.07	37.58

स्रोत : Census of India, 2001, Series-1 India Primary Census Abstract

जनगणना 2001 में मुख्य कर्मियों एवं सीमान्त कर्मियों को इन चार क्रियाओं में विभक्त दिया गया। जिसका राज्यानुसार वितरण उपर की तालिका में दिया गया है एवं इसकी विवेचना भी ऊपर चार बिन्दुओं के अन्तर्गत की जा चुकी है।

इस प्रकार भारत में कुल कर्मियों के प्रतिशत का 31.71% कृषक, 26.69% कृषक मजदूर, 4.07% घरेलू उद्योग, एवं 37.58% अन्य कामगार के रूप में है।

वर्ष 2001 की जनगणना क आधार पर भारतीय श्रम शक्ति की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

(1) भारत में कुल श्रमिकों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है और श्रमशक्ति का आकर बढ़कर 40.2 करोड़ हो गया जो कुल जनसंख्या का लगभग 39% है।

(2) पिछले एक दशक में सीमान्त श्रमिकों की संख्या में लगभग 6 करोड़ की अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। जो कुल श्रमशक्ति में वृद्धि का लगभग 75% है। यह भारत की श्रम शक्ति में बढ़ती हुई अर्द्धबेरोजगारी का प्रतीक है।

(3) कुल श्रम शक्ति में स्त्रियों की संख्या का भारी विस्तार हुआ है। 1991 में यह संख्या लगभग 9 करोड़ थी जो 2001 में बढ़कर 12.7 करोड़ हो गया। अर्थात् इनकी संख्या में 3.7 करोड़ की भारी वृद्धि हुई।

(4) द्वितीयक एवं तृतीयक व्यवसायों में संलग्न श्रमिकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। जबकि प्राथमिक व्यवसायों में संलग्न श्रमिकों में कमी आती जा रही है।

(5) सीमान्त श्रमिकों की संख्या में पुरूषों से अधिक स्त्रियों की संख्या है। क्योंकि, अधिकांश स्त्रियाँ कृषक मजदूर है जिसे मोसमी रोजगार ही मिल पाता है। फसल की रोपनी एवं कटनी के समय तो उन्हें रोजगार मिल जाता है। शेष दिन वे बेरोजगार रहती है आगे की तालिका में, राज्यानुसार मुख्य एवं सीमान्त श्रमिकों का आँकड़ा दिया गया है।

बाल श्रमिकों के उन्मूलन और व्यवस्थापन संबंधी श्रम कानून बन जाने से पिछले 15 वर्षों में बाल श्रमिकों की संख्या में कमी आई है। बढ़ती जनसंख्या, अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी आदि कई समस्याओं के कारण कई परिवार छोटी उम्र में बच्चों को काम पर भेज देते हैं। यह एक गंभीर सामाजिक आर्थिक समस्या है, जिसमें बाल श्रमिक का व्यवस्थापन कठिन चुनौती है। दूसरी ओर अधिकांश कार्यों में संलग्न है जो देश के पिछड़ेपन का घोतक है। रोजगार के पर्याप्त अवसरों एवं साधनों के न होने के कारण कृषि पर जनसंख्या का अधिक भार है। यहाँ काम करने वाले लोगों की संख्या अधिक है परन्तु साधन एवं अवसर की कमी है। जिससे बेरोजगार एवं सीमान्त श्रमिक अधिक है।

भारत में राज्यानुसार मुख्य श्रमिक एवं सीमान्त श्रमिकों का प्रतिशत (2001)

राज्य केंद्र शासित प्रदेश	मुख्य श्रमिक	सीमान्त श्रमिक
1. चण्डीगढ़*	96.6	3.4
2. दिल्ली	95.0	5.0
3. दमन एवं द्वीप	92.8	7.2
4. पांडिचेरी	92.6	7.4
5. अरूणाचल प्रदेश	85.9	14.2
6. पंजाब	85.8	14.2
7. तमिलनाडु	85.2	14.8
8. महाराष्ट्र	84.4	15.6
9. दादरा नगर हवेली	84.3	15.7

10. अण्डमान निकोबार द्वीप समूह	83.4	16.6
11. आंध्रप्रदेश	83.2	16.8
12. नागालैंड	83.0	17.0
13. कर्नाटक	82.3	17.7
14. गोवा	81.3	18.7
15. पश्चिम बंगाल	80.9	19.1
16. गुजरात	80.1	19.9
17. केरल	80.1	19.9
18. त्रिपुरा	78.7	21.3
19. पश्चिम बंगाल	78.1	21.9
20. मेघालय	78.0	22.0
21. मिजोरम	70.6	22.4
22. लक्षद्वीप	73.3	23.7
23. बिहार	78.3	24.7
24. असम	74.6	25.4
25. हरियाणा	74.5	25.5
26. उत्तराखण्ड	74.1	25.9
27. मध्यप्रदेश	74.1	25.9
28. राजस्थान	73.4	26.6
29. उत्तर प्रदेश	72.9	27.1
30. छत्तीसगढ़	72.9	27.1
31. मणिपुर	69.8	30.2
32. जम्मू और काश्मीर	69.5	30.5
33. उड़ीसा	67.2	32.8
34. हिमालच प्रदेश	65.6	34.4
35. झारखंड	63.8	36.2
अखिल भारतीय	77.8	22.2

स्रोत : Census of India, 2001, Series-1 India Primary Census Abstract

ऊपर के तालिका से स्पष्ट है कि विभिन्न राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में मुख्य श्रमिक एवं सीमान्त श्रमिकों की संख्या में पर्याप्त भिन्नता है। कृषि प्रधान राज्यों में सीमान्त श्रमिकों का प्रतिशत अधिक है। लेकिन जिन राज्यों में तलनात्मक रूप से उद्योग का विकास अधिक हुआ है। मुख्य श्रमिकों का प्रतिशत अधिक है।

2.9 निष्कर्ष (Summing-up)

उपर्युक्त अवलोकन के आधार पर मोटे तौर पर हम व्यवसायों को तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। कृषि, पशुपालन, वानिकी और मत्स्य आदि को ''प्राथमिक क्रियाएँ'' खनन एवं उद्योग को द्वितीयक क्रियाएँ एवं निर्माण, व्यापार-वाणिज्य, परिवहन एवं अन्य सेवा को 'तृतीयक क्रियाएँ' कहते हैं। तृतीयक क्रियाएँ वास्तव तृतीयक क्रियाएँ के लए प्राथमिक एवं द्वितीयक क्रिया की सहायता से चलती है। व्यवसायिक वितरण का अर्थ देश की श्रम शक्ति का विभिन्न व्यवसायों या क्रियाओं में वितरण है।

विभिन्न जनगणना से प्राप्त आंकड़ों के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि देश में कृषि पर निर्भरता अत्यधिक है। प्राथमिक कार्यों में भारत की सर्वाधिक जनसंख्या संलग्न है। इसके अलावा व्यवसायिक संरचना के अध्ययन से ग्रामीण-नगरीय व्यवसायिक असमानता एवं स्त्री-पुरूष विभेद भी दृष्टिगत होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ अधिकांश स्त्री कृषि कार्य में कृषक मजदूर की भूमिका में है, वहीं उन्हें मौसमी बेरोजगारी का सामना भी करना पड़ता है। जबकि नगरीय क्षेत्र जहाँ मुख्यत: द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाएँ होती हैं स्त्री की सहभागिता दर कम है।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि में त्वरित करने से भूमि तथा इस पर निर्भर श्रम की उत्पादिता में वृद्धि होगी जिससे उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में प्रोत्साहन प्राप्त होगा एवं व्यावसायिक संरचना में संरचनात्मक परिवर्त्तन होगा।

2.10 अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise)

(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(1) कार्य सहभागिता दर से क्या समझते हैं? भारत में कार्य सहभागिता दर पर टिप्पणी करें।

(2) विभिन्न जनगणना वर्ष में दिये गए श्रमिकों की परिभाषा एवं वर्गीकरण को स्पष्ट करें।

(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(1) भारत की व्यावसायिक संरचना पर एक निबंध लिखिए।

Write an essay on the occupation structure of Population in India.

2.11 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) जनसंख्या भूगोल - आर० सी० चँदना।

(2) जनसंख्या भूगोल- डॉ० रामदेव त्रिपाठी।

(3) Geography of Population - R.C. Chandana

(4) जनसंख्या भूगोल - बी० पी० पाण्डा।

(5) भारतीय अर्थव्यवस्था - रूद्र दत्त एवं के० पी० सुन्दरम।

(6) भारत का वृहत्त भूगोल - डॉ० पी० आर० चौहान एवं डा० महात्तम प्रसाद

❖❖❖

भारत में साक्षरता
(Literacy in India)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

3.0 उद्देश्य (Objective)

3.1 परिचय (Introduction)

3.2 साक्षरता की परिभाषा (Definition of Literacy)

3.3 साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Literacy)

3.4 भारत में साक्षरता (Literacy in India)

- 3.4.1 पुरूष साक्षरता (Male Literacy)
- 3.4.2 स्त्री साक्षरता (Female Literacy)
- 3.4.3 ग्रामीण साक्षरता (Rural Literacy)
- 3.4.4 नगरीय साक्षरता (Urban Literacy)

3.5 साक्षरता का प्रादेशिक प्रारूप (Regional Pattern of Literacy)

3.6 निष्कर्ष (Summing-Up)

3.7 अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise)

- (A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)
- (B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

3.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

3.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को निम्नलिखित बिंदुओं पर विस्तार से जानकारी देना है :-

- साक्षरता का अर्थ एवं परिभाषा
- साक्षरता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक।
- भारत में साक्षरता की स्थिति।
- पुरूष एवं स्त्री साक्षरता का प्रारूप।
- ग्रामीण एवं नगरीय साक्षरता।

- अखिल भारतीय साक्षरता का प्रादेशिक प्रारूप।

3.1 परिचय (Introduction)

साक्षरता का शाब्दिक अर्थ किसी भी व्यक्ति के उस गुण से है जो उसके पढ़ने और लिखने की योग्यता को प्रकट करती है। साक्षरता मनुष्य के सोच-विचार और कार्य करने की योग्यता में वृद्धि करती है और उसे नवीन खोजों की दिशा में आकृष्ट करती है। हम जानते हैं कि किसी देश के आर्थिक कार्यक्रमों की सफलता एवं सामाजिक सांस्कृतिक विकास का दारोमदार वहाँ के साक्षर लोगों पर होता है। निरक्षर जनसंख्या उसमें बाधक होती है। वर्त्तमान समय में विश्व के वही देश तेजी से विकसित हो रहे हैं जहाँ की अधिकांश जनसंख्या साक्षर व शिक्षित है। यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि साक्षरता एवं शिक्षा मे मूलभूत अंतर है। साक्षरता का तात्पर्य व्यक्ति के उस गुण से है जो उसे किसी भी भारतीय भाषा में पढ़ने-लिखने तथा समझने की योग्यता प्रदान करता है। जबकि, आर्थिक विकास के लिए देश के अधिकतम लोगों को कम-से-कम उस स्तर तक शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक है ताकि वे लखे हुए निर्देश तथा अन्य महत्त्वपूर्ण बातों को अच्छी तरह समझकर उस विषय पर स्वयं निर्णय ले सकें।

इस अध्याय में भारत में साक्षरता के प्रारूप का विस्तार से वर्णन किया गया है। वर्त्तमान समय में इसके महत्व को देखते हुए छात्रों को इस पाठ का अध्ययन गंभीरता के साथ करना जरूरी है।

3.2 साक्षरता की परिभाषा (Definition of Literacy)

साक्षर उसे कहते हैं जो किसी भारतीय भाषा को पढ़ और लिख सकता है तथा समझ सकता है और सात वर्ष या उससे अधिक आयु का है। साक्षरता का संबंध सामान्यत: स्कूल जाने से होता है चाहे वह औपचारिक हो या अनौपचारिक।

संयुक्त राष्ट्र संघ के जनसंख्या आयोग के अनुसार 5 वर्ष या इससे अधिक आयु वर्ग का व्यक्ति यदि एक सरल कथन को समझकर पढ़ तथा लिख सकता है तो वह साक्षर है। भारतीय जनगणना विभाग ने भी लगभग इसी परिभाषा को अपनाया है। साक्षरता दर कुल जनसंख्या में साक्षर व्यक्तियों के प्रतिशत को दर्शाती है। साक्षर जनसंख्या वह गुणात्मक विशेषता है, जो किसी क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास की एवं विश्वसनीय तथा यथार्थ सूचक होती है। यह जनसंख्या के उस सामाजिक पक्ष को प्रतिबिंबित करती है, जिससे जनसंख्या की गुणवत्ता को निर्धारित किया जा सकता है।

3.3 साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Literacy)

भारत में प्रादेशिक एवं सामाजिक स्तर पर असमानता पायी जाती है । साक्षरता दर को प्रभावित करने वाले कारकों में आर्थिक विकास का स्तर, नगरीकरण, जीवन-स्तर महिलाओं की सामाजिक स्थिति, विभिन्न शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता तथा सरकारी नीतियाँ प्रमुख हैं। आर्थिक विकास का स्तर स्वयं साक्षरता का कारण एवं परिणाम दोनों है। उन्नत तथा नगरीय अर्थव्यवस्थाएँ, उच्चतर साक्षरता दर तथा उच्चतर

शैक्षणिक स्तर को प्रतिबिंबित करती है। साक्षरता एवं शिक्षा का निम्न स्तर ग्रामीण-कृषि अर्थव्यवस्था का सूचक है। भारत जैसे देशों में जहाँ ऐसी विभिन्नताएँ अधिक दृष्टिगोचर होती हैं साक्षरता-क्रांति को कोई स्वरूप देना अभी शेष है।

3.4 भारत में साक्षरता (Literacy in India)

इतिहास में इसका प्रमाण है कि भारत में साक्षरता सर्वव्यापक रही है। क्योंकि प्राचीन काल में जाति व्यवस्था कठोर नहीं थी और समाज में स्त्री का स्थान ऊँचा था। मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों, पर्दा प्रथा के चलन, जातिगत व्यवसायों की प्रथा से साक्षरता का मार्ग अवरूद्ध हो गया। ब्रिटिश काल में शिक्षा मुख्यत: सरकारी नौकरियों से जुड़ गयी, यह एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था थी, जिससे कार्यों के प्रति घृणा, कमजोरी, सफेदपोशी, वेतनभोगी क्लर्कों के रूप में उत्पन्न हुई। वस्तुत: हद तक इस दिशा में आज भी कार्य हो रहा है। 20वी शताब्दी के आरंभ में भारत में कुल जनसंख्या की साक्षरता मात्र 5.35% थी जो 1951 में बढ़कर 16.67% हो गई थी। निम्नलिखित तालिका से भारत में 20वीं शताब्दी में साक्षरता के दशकीय विकास को दर्शाया गया है।

भारत में साक्षरता का विकास दर (1901- 2001)

	साक्षर जनसंख्या का प्रतिशत		
जनगणना वर्ष	कुल	पुरूष	स्त्री
1901	5.32	9.83	0.69
1911	5.92	10.56	1,05
1921	7.16	12.21	1.81
1931	9.50	15.59	2.93
1941	16.10	-	7.3
1951	18.33	27.16	8.86
1961	28.30	40.40	15.35
1971	34.45	45.96	21.97
1981	41.57	56.38	29.76
1991	52.21	64.13	39.29
2001	64.84	75.26	53.67

स्रोत : 1. India 2008, A Reference Annual, P.11

2. Census of India, 1991 and 2001

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वर्षों में भारतीय साक्षरता दर में पर्याप्त सुधार हुआ है। वर्ष 1951 में जहाँ साक्षरता दर 18.33% तथा वर्ष 2001 में यह बढ़कर 64.84% हो गया। सन् 2001 में पुरूष एवं स्त्रियों की साक्षरता दर क्रमश: 75.26 तथा 53.67% थी। 2001 में तीन-चौथाई से अधिक पुरूष तथा आधी से अधिक महिलाएँ साक्षर थीं। 2001 में 1991 की तुलना में साक्षरता दर 13.17% की वृद्धि हुई। यह वृद्धि पुरूषों में 11.72 एवं महिलाओं में 14.87% थी। यह वृद्धि दर स्वतंत्र भारत में सबसे अधिक थी।

ज्यो-ज्यों भारत की जनसंख्या बढ़ती गई त्यों-त्यों साक्षर एवं निरक्षर लोगों की संख्या भी बढ़ती गई है। त्यों-त्यों जनगणना इतिहास में 2001 की जनगणना के समय निरक्षर जनसंख्या महत्वूर्ण कमी आई। 1991 में निरक्षर लोगों की संख्या 32.82 करोड़ थी जो घटकर 2001 में 29.62 करोड़ रह गई। इसे हमारे साक्षरता अभियान के लिए बड़ी उपलब्धि माना जाता है। इसलिए 1991-2001 दर को साक्षरता दशक (Literacy Decade) का नाम दिया गया।

ऊपर के तालिका में जो साक्षरता दर दर्शायी गई है उसमें 7 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को शामिल नहीं किया गया है। परिभाषा की दृष्टि से वे निरक्षर हैं। इस संदर्भ में यह बात उल्लेखनीय है कि सन् 1951, 1961 और 1971 में पांच वर्ष या इससे अधिक आयु की जनसंख्या तथा 1981, 1991 तथा 2001 के लिए 7 वर्ष या उससे अधिक आयु की जनसंख्या को सम्मिलित किया गया है।

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से साक्षरता एवं शिक्षा के उत्थान के लिए विशेष प्रावधान किये गये। प्राथमिक विद्यालय से लेकर विभिन्न स्तर के विद्यालयों की संख्या और शिक्षकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि की गयी। प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया गया। नि:शुल्क शिक्षा व्यवस्था, निर्धन तथा तीव्र बुद्धि के छात्र-छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति आदि सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास सराहनीय है और उसी का परिणाम है कि भारतीय साक्षरता दर में लगातार वृद्धि दर के रूप में सामने आ रही है।

3.4.1 पुरुष साक्षरता (Male Literacy) :-

भारत जैसे विकासशील देश में पुरूष और स्त्रियों की साक्षरता दर में अत्यधिक अन्तर पाया जाता है। वर्ष 1951 में जहाँ भारत में पाँच साक्षरता दर 27.16% थी वही 2001 में यह दर 75.26% हो गयी। अर्थात 2001 में तीन-चौथाई से अधिक पुरूष जनसंख्या साक्षर थी। देश में स्त्री जनसंख्या के साक्षरता की तुलना में पुरूष जनसंख्या की साक्षरता दर हमेशा से अधिक रही है। 1951 के पहले यानी 1901 से 1951 के मध्य भारत में कुल साक्षरता दर स्त्रियों की तुलना में अधिक रही। इसका कारण यह हो सकता है कि ब्रिटिश सरकार ने भारत में शिक्षा व्यवस्था के विकास के लिए जो भी कार्य किए उसका लाभ पुरूष को अधिक मिला। लेकिन, वर्तमान में भारतीय समाज में पुरूष की प्रधानता होने के कारण ही शायद वर्तमान में पुरूष साक्षरता दर अधिक है। लेकिन, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महिलाओं की साक्षरता दर में भी तेजी से वृद्धि देखी जा रही है।

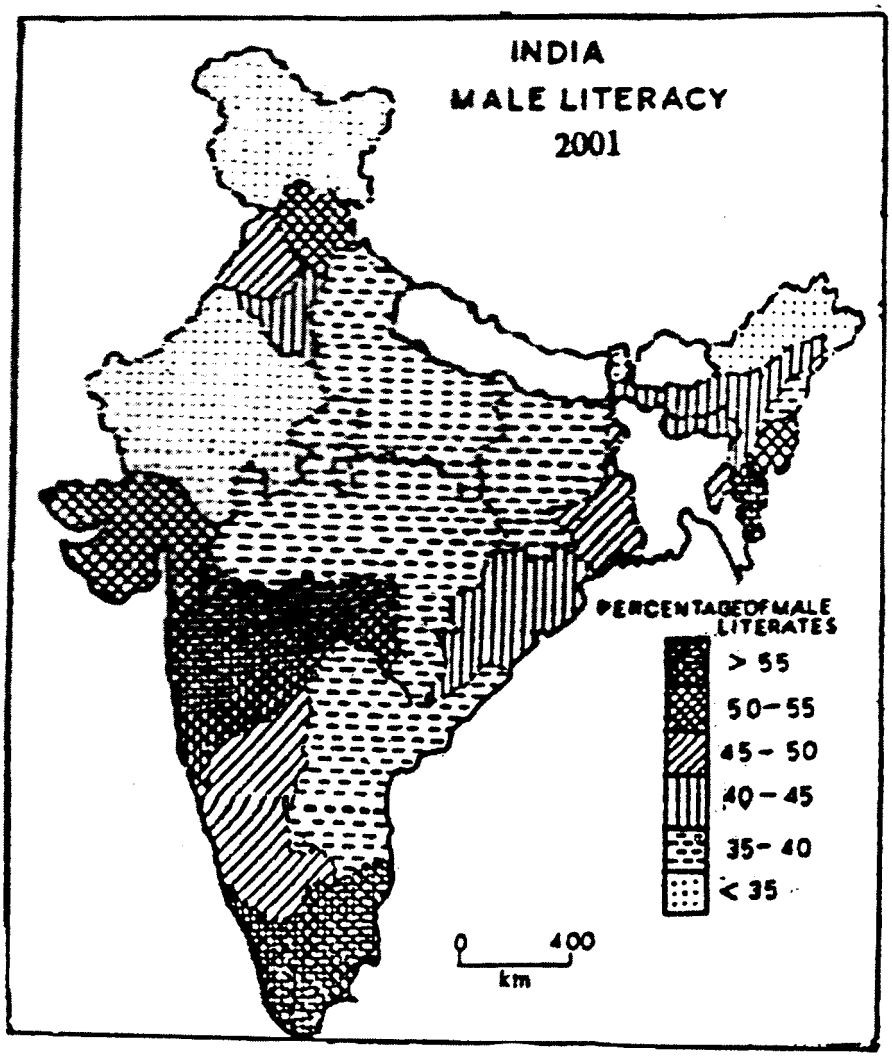

चित्र : भारत में पुरुष साक्षरता दर

3.4.2 स्त्री साक्षरता (Female Literacy) :-

स्त्री साक्षरता कुल स्त्री जनसंख्या में साक्षर स्त्रियों की जनसंख्या का अनुपात है। वर्ष 1901 में भारत जैसे देश में यह अनुपात 0.69% यानी नहीं के बराबर था। स्वतंत्रता प्राप्ति के दौरान अचानक इसमें वृद्धि देखी गई और 1951 में यह 8.86% हो गई। 1901 से अभी तक के आँकड़ों पर यदि हम गौर करें तो पाते हैं कि यहाँ स्त्री साक्षरता दर हमेशा से कम रही है। 1901 से 1941 के मध्य ब्रिटिश शिक्षा नीति का स्त्रियों को पर्याप्त लाभ नहीं मिल पाया। लेकिन, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के प्रयास से स्त्री को साक्षरता के प्रति जागरूक किया गया। परिणामत: इसमें सुधार दर्ज किया जा रहा है और वर्ष 2001 के आँकड़ों के अनुसार आज देश के कुल स्त्री जनसंख्या का आधा से अधिक साक्षर है।

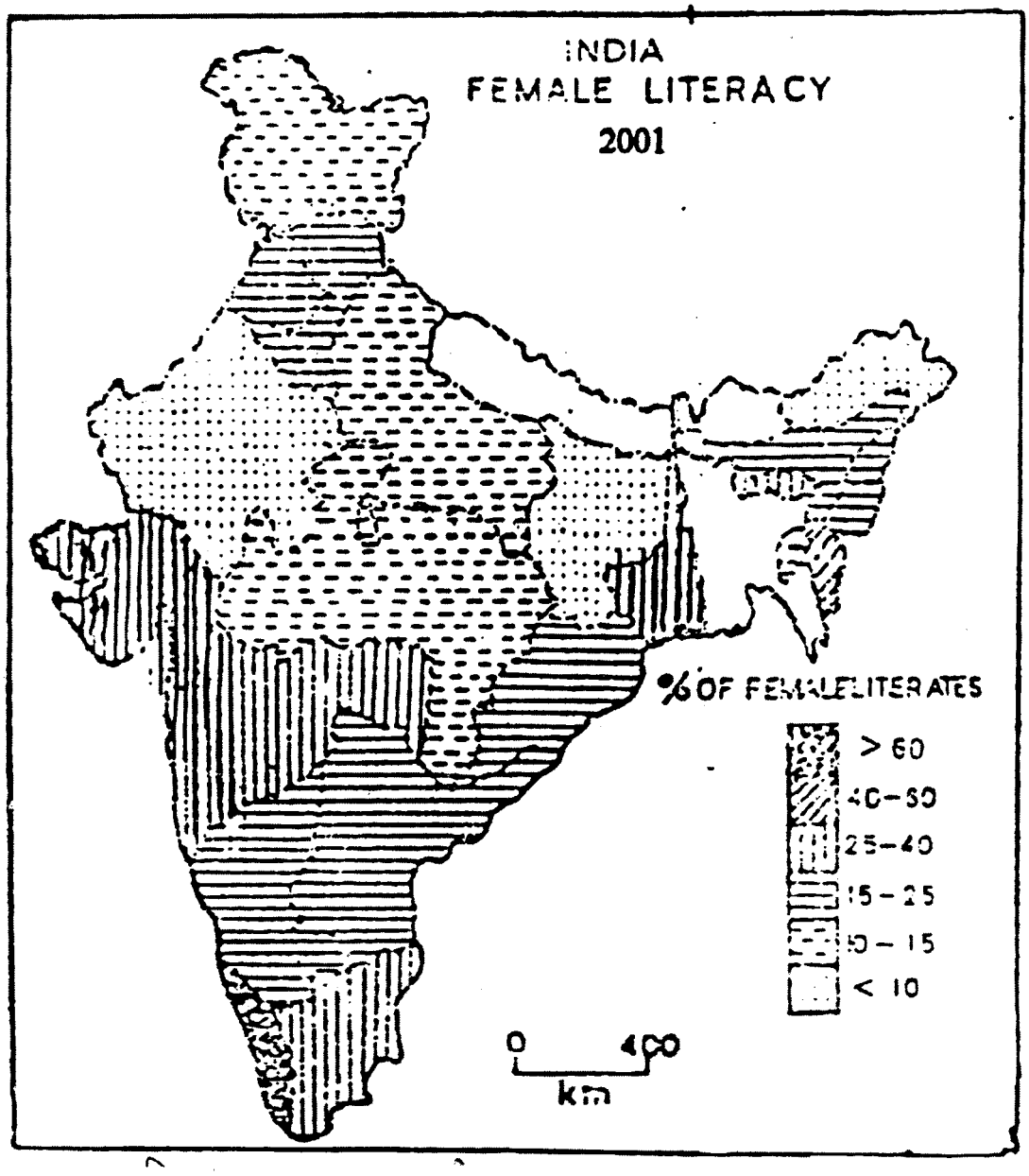

चित्र : भारत स्त्री साक्षरता दर

स्त्रियों की साक्षरता के संदर्भ में पुरूष स्त्री साक्षरता दर में अंतर एक महत्वपूर्ण सूचक है। यह सूचक 1951 में 18.3% से बढ़कर 1981 में 26.62% हो गया। परन्तु उसके बाद इसमें लगातार कमी आ रही है। 1991 मे इसमें मामूली कमी आई और यह 24.84 हो गया। परन्तु 2001 में यह घटकर 21.59 रह गया।

भारत कुल साक्षरता दर में पुरूष-महिला साक्षरता

जनगणना वर्ष	कुल साक्षर व्यक्ति (% में)	पुरूष साक्षरता (% में)	दर का अंतर (1951-2001)	
			महिला साक्षरता (% में)	पुरूष-महिला अंतर (% में)
1951	18.33	27.16	8.86	18.30
1961	28.30	40.40	15.35	25.05
1971	34.45	45.96	21.97	23.98
1981	43.57	56.38	29.76	26.62
1991	52.21	64.13	39.29	24.84
2001	64.84	75.26	53.67	21.59

स्रोत :- India 2008, A Reference Annual, P.11.

3.4.3 ग्रामीण साक्षरता (Rural Literacy) :-

भारत के 304 जनपदों में 5-14 वर्ष के आयु वर्ग में ग्रामीण साक्षरता का अभाव पाया जाता है। जबकि, 48 जनपद में इस आयु वर्ग की साक्षरता अपेक्षाकृत अधिक है। 3 जनपद ग्रेटर मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता की जनसंख्या पूर्णत: नगरीय है।

यदि ग्रामीण साक्षरता के राज्यानुसार वितरण का अध्ययन किया जाय तो पता चलता है कि पांडिचेरी तमिलनाडु, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा आदि राज्यों को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में ग्रामीण साक्षरों की संख्या कम है। हालाँकि सम्पूर्ण भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता का अनुपात कम है परन्तु केरल, तमिलनाडु, पांडिचेरी, महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में ग्रामीण साक्षरता 50% से ऊपर है। जबकि देश की औसत साक्षरता 40% है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री साक्षरता की स्थिति दयनीय है। केवल दिल्ली, केरल, गोवा, दमन एवं दीव, पांडिचेरी, तमिलनाडु, मिजोरम तथा दिल्ली को छोड़ सम्पूर्ण भारत में ग्रामीण स्त्री साक्षरता 20% से कम है। जबकि, अरूणाचल प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर के ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री साक्षरता को 15% से भी कम है।

3.4.4 नगरीय साक्षरता (Urban Literacy) :-

देश में सर्वाधिक साक्षरता नगरीय क्षेत्रों में ही पायी जाती है। केरल, मिजोरम, तमिलनाडु, पांडिचेरी, मणिपुर, महाराष्ट्र, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़ और दिल्ली राज्यों में सर्वाधिक नगरीय साक्षरता है। इन क्षेत्रों में भी पुरूष साक्षरता दर महिलाओं से अधिक है। लेकिन, नगरीय क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा महिलाओं में शिक्षा व साक्षरता के प्रति जागरूकता अधिक है।

3.5 साक्षरता का प्रादेशिक प्रारूप (Regional Pattern of Literacy)

आगे तालिका में भारत के राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों में कुल साक्षरता दर, पुरूष एवं स्त्री साक्षरता दर प्रस्तुत की गई है। इस तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में साक्षरता के मामले में केरल सबसे आगे है। यहाँ कुल साक्षरता 90.24% है। पुरूष एवं स्त्रियों की साक्षरता की दृष्टि से भी केरल का प्रथम स्थान है। मिजोरम एवं लक्षद्वीप का केरल के बाद क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय स्थान है।

तालिका - राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में कुल साक्षरता दर तथा स्त्रियों एवं पुरूषों की साक्षरता दर (2001)

सं.	राज्य	कुल साक्षरता	पुरूष साक्षरता	स्त्री साक्षरता
1.	केरल	90.86	94.34	87.22
2.	मिजोरम	88.80	90.72	86.75
3.	लक्षद्वीप*	86.66	92.58	90.47
4.	गोवा	82.01	88.42	75.37
5.	चण्डीगढ़*	81.94	86.14	76.47
6.	दिल्ली	81.67	87.33	74.71
7.	अण्डमान निकोबार द्वीप समूह	81.30	86.33	73.24
8.	पांडिचरी	81.24	88.62	73.90
9.	दमन एवं द्वीप	78.18	86.73	65.61
10.	महाराष्ट्र	76.88	85.97	67.03
11.	हिमाचल प्रदेश	76.48	85.37	67.42
12.	तमिलनाडु	73.47	82.42	64.43
13.	त्रिपुरा	73.19	81.02	64.91
14.	उत्तराखंड	71.62	83.28	59.63
15.	मणिपुर	70.58	80.33	60.53
16.	पंजाब	69.65	75.23	63.36
17.	गुजरात	69.14	79.66	70.80
18.	सिक्किम	18.81	76.04	60.40
19.	पश्चिम बंगाल	68.64	77.02	59.61
20.	हरियाणा	67.91	78.49	555.73
21.	कर्नाटक	66.64	76.10	56.87